प्रभात

# ऊँट का फूल

फूलों के उस गाँव में तरह-तरह के फूल थे। आक के फूल, अडसूटा के फूल, कटैडी के फूल, आम के फूल, नीम के फूल, बबूल के फूल...।

आक के फूल की शक्ल घुँघरू जैसी थी। परदेसी आक के फूल की शक्ल शहनाई से मिलती थी। हरेक फूल में कोई न कोई खूबी थी। कटैडी के फूलों को देख लगता मानों वे पीले पानी के बने हैं। बबूल के फूल का रंग सोने की याद दिलाता।

एक दिन उस फूलों के गाँव में एक ऊँट आया। आक के फूल ने पूछा, "तुम क्या चीज़ हो जी? मैं तो फूलों की दुनिया के सिवा और कोई दुनिया जानता ही नहीं। तुम किस दुनिया के हो?"

ऊँट अकबका गया। "किसी और दुनिया से क्या मतलब है तुम्हारा? मैं तो इसी दुनिया का हूँ।"

"इसी दुनिया के हो तो बताओ तुम किसके फूल हो?" आक के फूल ने पूछा।

ऊँट कोई जवाब नहीं दे पाया। आक के फूल ने प्यार से कहा, "देखो तुम बहुत ऊँचे हो। तुम अपनी डाली से कहो कि वह तुम्हें थोड़ा नीचे झुका दे ताकि हम आराम से बात कर पाएँ।"

"मेरी कोई डाली-वाली नहीं है।" ऊँट परेशान हुआ। "डाली ही नहीं है?" आक के फूल को अचरज हुआ और हँसी आ गई, "तब तुम किस पर लटक रहे हो?"

"मुझे कहीं लटके रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अपने पैरों पर सीधा खड़ा रह सकता हूँ।" ऊँट ने कहा।

"क्या तुम्हारी जड़ों को पैर कहते हैं?" फूल ने मामला समझने के लिए पूछा।

"तुमसे उलझने से तो अच्छा है मैं यहाँ से भाग जाऊँ।" ऊँट ने झल्लाते हुए कहा।

फूल ने बहुत प्यार से ऊँट से कहा, "शायद तुम्हें कुछ बुरा लगा है। पर जहाँ तक मैं समझता हूँ, धूप अभी इतनी तेज़ नहीं हुई है कि फूलों को बुरा लगने लगे और वे कुम्हला जाएँ। क्या तुम किसी वजह से कुम्हला रहे हो?"

"हाँ मैं तुम्हारे सवालों से कुम्हला रहा हूँ।" ऊँट ने कहा।

"देखो जो जिस पेड़, पौधे या झाड़ी पर लगा होता है वो उसी का फूल होता है। तुम किसके फूल हो?" फूल को अजीब लग रहा था कि दुनिया में कोई किसी का फूल न हो।

"देखो, मैं एक ऊँट हूँ कोई फूल नहीं।" ऊँट ने हाँफते हुए कहा।

फूल ने कोमलता से समझाया, "ऊँट हो? तो तुम ऊँट के फूल हुए। अब देखो कैर है तो कैर के फूल हैं। रोहिडा है तो रोहिडा के फूल हैं। इस तरह तुम ऊँट हो तो ऊँट के फूल हुए कि नहीं?"

ऊँट को फूल की यह वाली बात सच्ची भी लगी और अच्छी भी। उसकी इच्छा हुई कि काफिले में जाकर दूसरे ऊँटों को भी बताए। उसने आक के फूल को "फिर मिलेंगे" कहा और कूदता-फलाँगता काफिले में जा पहुँचा। जाते ही उसने सबको बताया, "हम सब ऊँटों के फूल हैं।"

ऊँटों ने कहा, "यह क्या होता है?" और उसकी बात समझने से इंकार कर दिया।

एक अनुमान है कि ऑलम्पिक में एथलीट अपने पीछे 2 मिलीयन पाउण्ड गन्दे कपड़ों का ढेर छोड़ जाते हैं। अन्दाज़ है कि चार लोगों के एक परिवार को इतने कपड़े गन्दे करने में 264 साल लग सकते हैं।

## फिसलपट्टी...

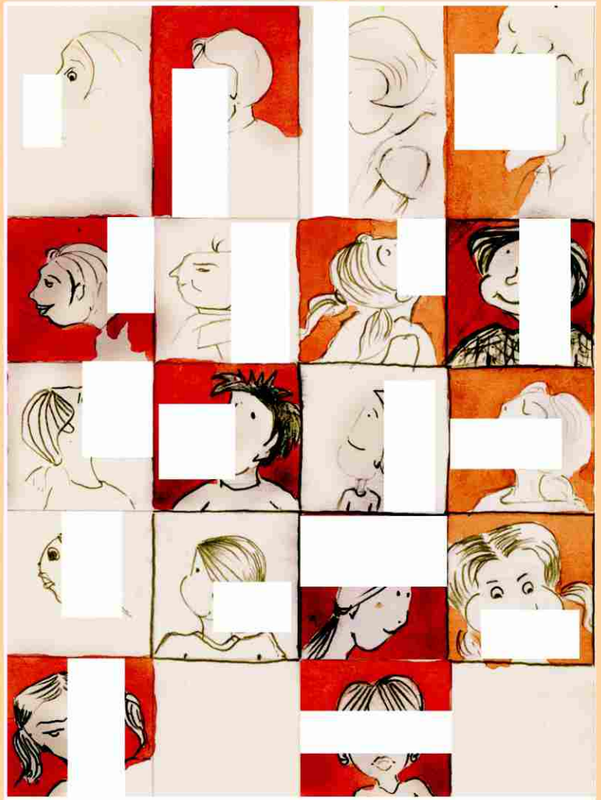

हर चेहरे से उसका एक हिस्सा फिसलकर नीचे गिर गया है।
क्या तुम बता सकते हो कौन-सा हिस्सा ऊपर के किस चित्र से गिर गया है?

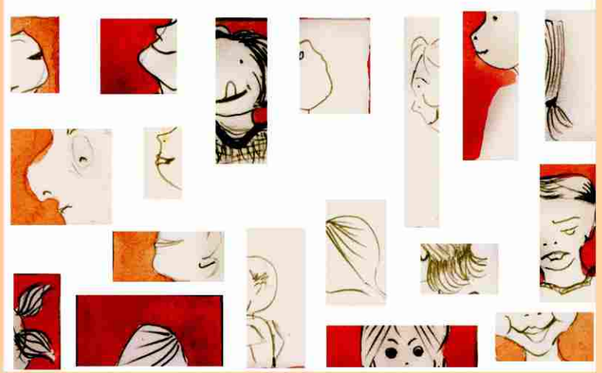

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर